एक रपट

चेतना—नई दिशाएं

महिला संगठनों की कड़ी में आइए आज आपको गुजरात में सन् 1980 में एक परियोजना के रूप में शुरू किए गए समूह 'चेतना' के बारे में बताएं। चेतना संस्था मुख्य रूप से औरतों और बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य की दिशा में काम कर रही है।

चेतना की शुरुआत

'चेतना' का अर्थ है जागरूकता या जागृती। इसकी शुरुआत सन् 1980 में गुजरात मे विक्रम साराभाई कम्युनिटि साईंस सेंटर की एक परियोजना के स्वरूप में हुई थी। इस परियोजना को अहमदाबाद के नेहरू फाउन्डेशन फॉर डेवलपमेंट के कार्यक्रम के तहत् शुरू किया गया था। सन् 1984 में चेतना समूह की विधिवत स्थापना की गई।

स्थापना के बाद चेतना ने अपना सबसे पहला कार्यक्रम गुजरात सरकार के लिए किया। दस ब्लाकों में काम कर रहे स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं को न्यूट्रीशन या अच्छे पौष्टिक खान-पान की जानकारी दी गई। इसी कार्यक्रम के दौरान चेतना समूह की सदस्याओं ने महसूस किया कि महज ट्रेनिंग करने से कुछ नहीं होगा। ज़रूरत है औरतों को उनके अपने बेहतर स्वास्थ्य की ज़रूरत को महसूस करने की। और इसके लिए आवश्यकता है स्वास्थ्य जागरूकता की।

इस समझ को साफ करने के अलावा यह भी ज़रूरी है कि लोगों के बीच फैले अंधविश्वासों, जंतर-मंतर, झाड़-फूंक के मसलों को भी चुनौती दी जा सके। साथ ही डाक्टरों और अंग्रेज़ी दवाइयों पर भी निर्भरता कम करने की। चूंकि ज्यादातर औरतें अपने शरीर और उसके बदलावों के बारे में नहीं जानतीं, इसलिए वे इन दोनों तरीकों पर निर्भर होकर रह जाती हैं। अपने शरीर की जानकारी होने से औरतें अपने शरीर पर हक़ तो हासिल करेंगी ही। साथ ही स्वास्थ्य सेवा के मौजूदा ढांचे को औरतों की ज़रूरतों के प्रति ज्यादा जवाबदेह और संवेदनशील बना सकेंगी।

इसलिए चेतना ने औरतों और बच्चों के साथ स्वास्थ्य मुद्दों पर काम करना तय किया। पिछले तेरह सालों में इसी दिशा में चेतना सरकारी और ग़ैर सरकारी संगठनों के साथ काम कर रही है। इन तेरह सालों को हम चार भागों में बांटकर इस समूह के काम पर नज़र डाल सकते है।

स्वास्थ्य शिक्षा संबंधी गतिविधियां

सन् 1981 में चेतना टीम ने आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम तैयार किया। यह ट्रेनिंग आई. सी. डी. एस के साथ मिलकर दी गई। कार्यकत्ताओं के साथ का यह कुछ दिन का रिश्ता चेतना के लिए एक लम्बे दौर के साथ की शुरुआत थी। इसके बाद चेतना ने राजस्थान और गुजरात आई. सी. डी. एस. के लिए ट्रेनिंग और पाठ्यक्रम कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इसी काम के दौरान यह महसूस किया गया कि स्वास्थ्य पर संदर्भ सामग्री की भी कमी है। औरतों को अपनी और अपने बच्चों को होने वाली आम बीमारियों की जानकारी होनी चाहिए। इसलिए चेतना ने युनिसेफ के सहयोग से परिवार नियोजन, स्तनपान, टीकाकरण आदि विषयों पर स्वास्थ्य सामग्री तैयार की। साथ ही बच्चों और माताओं

को होने वाली दस आम बीमारियों को लेकर चार्ट और पोस्टर बनाए। एनीमिया किट तथा अन्य स्वास्थ्य जानकारी देने वाली सामग्री भी तैयार की। इस शिक्षा सामग्री को स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद से गांवों में टेस्ट किया गया।

स्वास्थ्य प्रशिक्षण

1984 से 1988 तक चेतना ने मां-बच्चों के बेहतर विकास के लिए काम किया। बच्चों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए। मातृशिशु केन्द्र, प्रसूति गृह, बाल विकास गृहों की स्थापना की गई। इसके अलावा औरतों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम किए। इनमें औरतों को बच्चों की अच्छी सेहत, पौष्टिक आहार, टीकाकरण, आम बीमारियों के बारे में जानकारी दी जाती रही। साथ ही औरतों में जागृति और जानकारी विकास की भी कोशिशें की गईं। इसके साथ-साथ, अपना काम का दायरा बढ़ाते हुए दूसरे समूहों जैसे 'सेवा', 'सी. एस. डब्लयू. डी.' आदि के साथ सम्पर्क स्थापित किए। साथ ही छोटे पैमाने पर गुजरात, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, आंध्र-प्रदेश की आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं, बालवाड़ी सदस्याओं के लिए भी ट्रेनिंग की। इस सभी से न केवल 'चेतना' के काम को परिपूर्णता मिली, बल्कि एक परिपक्व नजरिया भी मिला।

समन्वय और संगठन

काम का यह तीसरा चरण संगठन का दौर था। अभी तक चेतना ने अपने काम को केवल स्वास्थ्य मुद्दों तक सीमित रखा था। पर अब स्वास्थ्य को सामाजिक, विकासीय और सांस्कृतिक मुद्दों के साथ जोड़ने का प्रयास शुरू हुआ। यानि अब केवल मां की सेहत का ध्यान न रखकर औरत की सेहत को केंद्र-बिंदु माना गया। बच्चों के स्वास्थ्य कार्यक्रमों में बच्चों की भागीदारी भी चेतना के काम का महत्वपूर्ण हिस्सा था। इसके साथ ही जड़ी-बूटी से दवाई बनाकर, औरतों की घरेलू इलाज की परम्परा को औरत की सेहत के साथ जोड़ा गया। सदियों से औरतें इन्हीं घरेलू नुस्खों की मदद से बीमारियों का इलाज करती आई हैं। इन्हीं की सहायता से औरत को उसके शरीर पर हक़ हासिल करने का प्रयास किया गया।

नई दिशाओं की ओर

इस समय तक चेतना समूह ने तय कर लिया था कि अब उनके कार्यक्रमों को दूसरे समूहों के साथ जोड़ने की आवश्यकता थी। इसलिए दो नए कार्यक्रम शुरु किए गए।

बाल संदर्भ केंद्रः यह केंद्र बच्चों की स्वास्थ्य शिक्षा पर काम कर रहे समूहों की मदद करेगा। यह मदद साझी संदर्भ सामग्री और कौशल दोनों रूप में की जाएगी। इसी के तहत् बच्चों के साथ काम कर रहे कार्यकर्त्ताओं की ट्रेनिंग, उनके काम का डाक्यूमेंटेशन, सामग्री तैयार करने की जिम्मेदारी भी मिलकर उठाई जाएगी।

चैतन्या औरतों के साथ काम कर रहे समूहों की मदद के लिए शुरू किया गया। इसमें सामग्री बनाना, उसे वितरित करना भी किया जाएगा। उद्देश्य यह है कि औरतें अपने-अपने परिवार और अपने समुदाय की सेहत की देखभाल बखूबी से कर पाएं।

चेतना पर और जानकारी के लिए लिखें—

चेतना
लीलावती बेन लालभाई का बंगला
सिविल कैम्प रोड
शाहीबाग
अहमदाबाद-380 004